अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) कुएँ को ठसाठस भरकर सौ-सौ वर्षों से एक-एक बालाग्र खंड निकाला जाय तो जितने काल में वह कुआ बिल्कुल खाली हो जाय उसको कहते हैं-
(क) सागरोपम (ख) पल्योपम
(ग) आरा (घ) अवसर्पिणी (ख)

(ii) एक धनुष होता है-
(क) चार हाथ (ख) दो हाथ
(ग) एक हाथ (घ) आठ हाथ (क)

(iii) आहारक शरीर प्रयोजन होने पर लब्धि प्रयोग से एक भव में कितनी बार बनाया जा सकता है-
(क) चार (ख) तीन
(ग) दो (घ) एक (ग)

(iv) तेउकायिक जीवों की उत्कृष्ट कायस्थिति होती है-
(क) संख्यात काल (ख) असंख्यात काल
(ग) 3 अहोरात्रि (घ) दो अहोरात्रि (ख)

(v) त्रसकायिक जीवों की उत्कृष्ट काय स्थिति होती है-
(क) 2000 सागरोपम (ख) 2000 सागरोपम झाझेरी
(ग) 2000 कोड़ाकोड़ी सागरोपम (घ) 2000 हजार कोड़ाकोड़ी (ख)

(vi) सास्वादन सम्यक्त्व की जघन्य काय स्थिति होती है-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) एक समय
(ग) छह आवलिका (घ) 66 सागरोपम (ख)

(vii) सामायिक चारित्र की उत्कृष्ट कायस्थिति होती है-
(क) देशोन करोड़ पूर्व (ख) करोड़ पूर्व
(ग) पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग (घ) देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन (क)

(viii) केवली समुद्घात में कुल समय लगते हैं-
(क) 2 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 8 (घ)

(ix) पन्नवणा सूत्र के कौनसे पद में भाषा का थोकड़ा चलता है-
(क) 10 (ख) 11
(ग) 16 (घ) 21 (ख)

(x) अठारह द्वारों में भाषा का वर्णन किया गया है, उसमें 15वाँ द्वार कौनसा है-
(क) दिशा (ख) स्थिति
(ग) काल (घ) नाम (घ)

(xi) जीव किस योग से भाषा के पुद्गल ग्रहण करता है-
(क) मन (ख) वचन
(ग) काया (घ) वचन एवं काया (ग)

(xii) जो भाषा गंभीर शब्द अर्थ वाली होने से स्पष्ट न हो, उसे कहते हैं-
(क) व्याकृता (ख) अव्याकृता
(ग) संशयकरण (घ) अभिगृहिता (ख)

(xiii) मड़ाई निर्ग्रन्थ बाह्य और आभ्यन्तर श्वासोच्छ्वास लेता है, इसलिए वह कहलाता है-
(क) भूत (ख) प्राण
(ग) जीव (घ) सत्व (ख)

(xiv) अवसर्पिणी काल के पाँचवें आरे में एक समय में उत्कृष्ट सिद्ध हो सकते हैं-
(क) 20 (ख) 108
(ग) 10 (घ) 8 (क)

(xv) सिद्धस्थान में सर्वक्षेत्र में कहीं न कहीं से मनुष्य गति का जीव कितने समय में सिद्ध हो जाता है-
(क) 15 दिवस (ख) एक माह
(ग) छह मास (घ) एक वर्ष (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) एक औदारिक शरीर में अनन्त जीव होना, काय परीत्त कहलाता है। (नहीं)
(ii) नारकी, देवता, युगलिक, चरम शरीरी, तिरेसठ श्लाघनीय पुरुष, ये सभी उत्पत्ति समय करण अपर्याप्त होते हैं। (हाँ)
(iii) नो संज्ञी नो असंज्ञी जीवों की कायस्थिति सिद्धों की अपेक्षा से सादि अपर्यवसित बतलाई गई है। (हाँ)
(iv) सिद्ध भी अचरम है क्योंकि उनके चरमपना नहीं होता है। (हाँ)
(v) अयोगी में सादि अपर्यवसित का एक भंग मिलता है। (हाँ)
(vi) स्पर्श की अपेक्षा एक स्पर्श वाले पुद्गल भाषा रूप में ग्रहण नहीं किए जाते। (हाँ)
(vii) दूसरी वस्तु की अपेक्षा से जो सत्य है, वह प्रतीत्य सत्य है। (हाँ)
(viii) गांव या नगर विशेष की निश्चित मृत्यु संख्या ज्ञात न होने पर भी यह कहना कि 'आज यहाँ दस मरे' उत्पन्न मिश्रित भाषा है। (नहीं)
(ix) मड़ाई निर्ग्रन्थ सुख-दुःख को भोगता है, इसलिए वेद कहलाता है। (हाँ)
(x) सिद्ध क्षेत्र की लम्बाई-चौड़ाई 45 हजार योजन है। (नहीं)
(xi) अल्पबहुत्व के आधार पर प्रत्येक बुद्ध सबसे थोड़े होते हैं। (नहीं)
(xii) एक समय में 108 सिद्ध हुए सबसे थोड़े तथा एक समय में 107 सिद्ध हुए, उससे अनन्तगुणा है। (हाँ)
(xiii) श्री पन्नवणा सूत्र के 11वें पद में पुद्गल परावर्तन का थोकड़ा चलता है। (नहीं)
(xiv) तीन ऋतु का एक अयन होता है। (हाँ)
(xv) दो हजार धनुष का एक गाउ (कोस) होता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i) सूक्ष्म वनस्पति के पर्याप्त-अपर्याप्त दोनों को मिलाकर उत्कृष्ट काय स्थिति	(क)संख्यात महीनों की	असंख्यात काल (पुढवीकाल)
(ii) प्रत्येक वनस्पति के अपर्याप्त पर्याप्त दोनों को मिलाकर उत्कृष्ट काय स्थिति	(ख) एक समय	70 कोडाकोडी सागरोपम
(iii) साधारण वनस्पति के पर्याप्त की उत्कृष्ट काय स्थिति	(ग) असंख्यात काल (पुढवीकाल)	अन्तमुर्हूर्त्त
(iv) मन, वचन, योग की जघन्य काय स्थिति	(घ) 70 कोडाकोडी सागरोपम	एक समय
(v) पर्याप्त चतुरिन्द्रिय की उत्कृष्ट काय स्थिति	(च) अन्तमुर्हूर्त्त	संख्यात महीनों की
(vi) शतरंज के मोहरों को हाथी, घोड़ा, ऊँट कहना	(छ) आज्ञापनी	स्थापना सत्य
(vii) हे देवदत्त!	(ज) स्थापना सत्य	आमंत्रणी
(viii) यह करो, उठो, बैठो	(झ) आमंत्रणी	अज्ञापनी
(ix) जूँ (यूका)	(य) दो पाउ	आठ लीख
(x) वेंत	(र) चार गाउ	दो पाउ
(xi) योजन	(ल) आठ लीख	चार गाउ
(xii) मृतादि अर्थात् प्रासुक भोजन करने वाला	(व) 4	मड़ाइ
(xiii) एक समय में प्रत्येक सिद्ध	(क्ष) 2 हाथ	10
(xiv) सिद्ध होने के लिए जघन्य अवगाहना	(त्र) 10	2 हाथ
(xv) उर्ध्व लोक में एक समय में सिद्ध	(ज्ञ) मड़ाई	4

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मैं दर्शन का एक भेद हूँ, मेरी जघन्य कायस्थिति एक समय की होती है।	अवधि दर्शन
(ii)	मेरी पर्याप्तक की उत्कृष्ट काय स्थिति 24000 वर्षों की होती है।	वायु काय
(iii)	मैं अर्द्धपुदगल परावर्तन काल से पाँच गुणा अधिक हूँ।	अढ़ाई पुद्गल परार्वन काल
(iv)	मैं कषाय का एक भेद हूँ, मेरी जघन्य स्थिति एक समय होती है।	लोभ कषाय
(v)	मैं एक लेश्या हूँ, मेरी काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट तैतीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त अधिक है।	कृष्ण या शुक्ल लेश्या
(vi)	मैं वह सत्य हूँ, जो संबंध की अपेक्षा से होता है।	योग सत्य
(vii)	मैं व्यवहार भाषा का ऐसा भेद हूँ, जिससे नियत का अर्थ निश्चय होता है।	अभिगृहीता
(viii)	मैं एक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी दोनों मिलाकर बनता हूँ।	काल चक्र
(ix)	कर्मवशात् जीव मेरे अन्दर परिभ्रमण करता है,भटकता है, मैं चौदह राजू प्रमाण हूँ।	संसार/लोक
(x)	मैं एक आरा हूँ, मेरा काल तीन कोडाकोडी सागर होता है।	दूसरा आरा
(xi)	मैं वह काल विशेष हूँ, जो जगद्वती समस्त परमाणुओं को एक ही शरीर में रहते हुए स्पर्श (ग्रहण)करके छोड़ देने पर बनता हूँ।	सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन
(xii)	मैं वह क्षेत्र हूँ, जहाँ सिद्ध होते ही रहते हैं।	महाविदेह
(xiii)	मैं वह चारित्र हूँ, जिसके बिना वर्तमान में कोई भी सिद्ध नहीं होते।	यथाख्यात चारित्र
(xiv)	मैं वह द्वीप हूँ, जहाँ 15 कर्मभूमि से सिद्ध होते हैं।	अढ़ाई द्वीप
(xv)	मैं अवसर्पिणी काल का ऐसा आरा हूँ, जिसमें मात्र 64 वर्ष तक ही सिद्ध हो सकते हैं।	पाँचवाँ

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) बादर काल किसे कहते हैं ?

उ. अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण क्षेत्र में रहे हुए आकाश प्रदेशों को प्रति समय निकालने पर जितना काल लगे, उसे बादर काल कहते हैं। यह काल असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रमाण होता है।

(ii) पुद्गल परावर्तन काल किसे कहते हैं ?

उ. लोक में जितने भी पुद्गल रहे हुए हैं, उन्हें किसी एक वर्गणा के रूप में जन्म-मरण करते-करते ग्रहण करके छोड़ दे, उसमें जितना समय लगे, उसे पुद्गल परावर्तन काल कहते हैं।

(iii) दर्शन पद में अन्तर को समझाइए।

उ. चक्षुदर्शन और अवधिदर्शन का अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का, उत्कृष्ट अनन्तकाल यानि वनस्पतिकाल का। अचक्षुदर्शन और केवल दर्शन का अन्तर नहीं होता।

(iv) मड़ाई निर्ग्रन्थ के जीव को क्या कहना चाहिए ?

उ. उसे सिद्ध कहना, बुद्ध कहना, मुक्त कहना, पारगत कहना, परम्परागत कहना। इस प्रकार उसे सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिर्वृत्त, अन्तकृत और सर्वदुःखों से रहित कहना चाहिए।

(v) परम्पर सिद्ध किसे कहते हैं ?

उ. जिन्हें सिद्ध हुए दो समय से लेकर अनन्त समय हो गए हैं, उन्हें परम्पर सिद्ध कहते हैं।

(vi) भाव पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं ?

उ. अनुभाग स्थानों में यानि रसबंध में हेतु भूत असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण अध्यवसायों में एक जीव जितने काल में अनन्तर अथवा परम्परा से मरण को प्राप्त करे, उतने काल को बादर भाव

पुद्गल परावर्तन कहते हैं।

(vii) सिद्धों के थोकड़े में गतिद्वार को समझाइए।

उ. केवल मनुष्य गति से ही सिद्ध हो सकते हैं, अन्य गति से नहीं। पहली चार नरकों से, पृथ्वी-पानी और प्रत्येक वनस्पति से, संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक, इन चार प्रकार के देवताओं से निकले हुए जीव मनुष्य गति से सिद्ध हो सकते हैं।
नोटः- इसके अलावा अन्य गति द्वारों से लिखा गया उत्तर भी सही माना जायेगा।

(viii) भाषा के अठारह द्वारों में पर्याप्त द्वार को समझाइए।
प्रतिनियत रूप से जिसका निश्चय हो सके, वह पर्याप्त भाषा है। जिसका प्रतिनियत रूप से निश्चय न हो सके, वह अपर्याप्त भाषा है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) उपयोग पद की काय स्थिति को समझाइए।

उ. साकार उपयोग (ज्ञान) वाले और अनाकार उपयोग (दर्शन) वाले की काय स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त की होती है।

(ii) स्त्रीवेद के पाँच प्रकार की काय स्थिति से क्या स्पष्ट होता है ?

उ. मनुष्य स्त्री अथवा तिर्यंच स्त्री देवलोक में देवी रूप में उत्पन्न हो तो दो बार से अधिक उत्पन्न नहीं होती। अर्थात् मनुष्य स्त्री/ तिर्यंच स्त्री और देवी, मनुष्य स्त्री/तिर्यंच स्त्री और देवी इस प्रकार से लगातार देवी के अधिकतम 2 भव ही होते हैं।

(iii) आठ प्रकार की वर्गणाओं के नाम बताइए।

उ. 1. औदारिक 2. वैक्रिय 3. आहारक 4. तैजस
5. भाषा 6. श्वासोच्छ्वास 7. मन और 8. कार्मण वर्गणा।

(iv) मिश्र भाषा के दस भेदों के मात्र नाम लिखिए।

उ. 1. उत्पन्न मिश्रिता 2. विगत मिश्रिता 3. उत्पन्न विगत मिश्रिता 4. जीव मिश्रिता
5. अजीव मिश्रिता 6. जीवाजीव मिश्रिता 7. अनन्त मिश्रिता 8. प्रत्येक मिश्रिता
9. अद्धा मिश्रिता 10. अद्धद्धा मिश्रिता।

(v) भाषा की उत्पत्ति किससे होती है ?

उ. भाषा की उत्पत्ति औदारिक, वैक्रिय और आहारक शरीर से होती है।

(vi) सिद्धों के थोकड़ों में ज्ञान द्वार को समझाइए।

उ. पूर्व की अपेक्षा से एक समय में मति एवं श्रुतज्ञान वाले उत्कृष्ट चार सिद्ध होते हैं। मति, श्रुत, अवधिज्ञान वाले 108 तथा मति, श्रुत व मनःपर्यवज्ञान वाले दस सिद्ध होते हैं। चार ज्ञान के धारक केवलज्ञान प्राप्त करके एक सौ आठ सिद्ध हो सकते हैं।

(vii) कार्मण पुद्गल परावर्तन से तैजस् पुद्गल परावर्तन का निष्पत्तिकाल अनन्त गुणा किस कारण से माना जाता है ?

उ. कार्मण पुद्गल परावर्तन से तैजस पुद्गल परावर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है, क्योंकि तैजस पुद्गल स्थूल है, अतः उनमें एक बार में अल्प पुद्गल का ग्रहण होता है। अल्प प्रदेशों से निष्पन्न होने के कारण एक बार में भी उन अल्प अणुओं का ही ग्रहण होता है, इसलिए यह उनसे अनन्त गुणा है।

(viii) काल को काल की उपमा में एक आवलिका से लेकर 1 संवत्सर तक का वर्णन कीजिए।

उ. असंख्यात समय की 1 आवलिका, संख्यात आवलिका का 1 श्वास, संख्यात आवलिका का 1 उच्छ्वास, एक श्वासोच्छ्वास काल का 1 पाणुकाल (प्राण), सात पाणु काल का 1 थोव (स्तोक), सात थोव का 1 लव, 77 लव का 1 मुहूर्त्त, 30 मुहूर्त्त की 1 अहोरात्रि, 15 अहोरात्रि का 1 पक्ष, दो पक्ष का 1 मास, दो मास की 1 ऋतु, तीन ऋतु का 1 अयन, दो अयन का 1 संवत्सर।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) सिद्धों का थोकड़ा लिया गया है-
(क) प्राभृत प्राभृत ग्रन्थ (ख) प्राभृत ग्रन्थ
(ग) प्राभृत सिद्ध ग्रन्थ (घ) सिद्ध प्राभृत ग्रन्थ (घ)

(b) सिद्धों का उत्कृष्ट विरह होता है-
(क) 4 माह (ख) 6 माह
(ग) 1 समय (घ) 6.5 माह (ख)

(c) एक समय में 108 सिद्ध हो सकते हैं-
(क) स्त्री (ख) पुरुष
(ग) नपुंसक (घ) अवेदी (ख)

(d) आठ जूं का एक होता है-
(क) उत्सेध अंगुल (ख) एक पाउ
(ग) ऊर्ध्व रेणु (घ) एक वेंत (क)

(e) आहारक शरीर की प्राप्ति पूरे संसार परिभ्रमण काल में हो सकती है-
(क) 3 बार (ख) 4 बार
(ग) 2 बार (घ) 5 बार (ख)

(f) कायस्थिति का थोकड़ा चलता है-
(क) पन्नवणा सूत्र पद 15 (ख) पन्नवणा सूत्र पद 16
(ग) पन्नवणा सूत्र पद 17 (घ) पन्नवणा सूत्र पद 18 (घ)

(g) एक सैकण्ड में आवलिका होती हैं-
(क) 5825 (ख) 5725
(ग) 5625 (घ) 5425 (क)

(h) कायस्थिति के थोकड़े में असंख्यात काल कितने प्रकार का बताया गया है-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 7 (ग)

(i) पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट कायस्थिति होती है-
(क) 2000 सागरोपम झाझेरी (ख) 1000 सागरोपम झाझेरी
(ग) पृथक्त्व 100 सागरोपम (घ) 70 कोड़ाकोडी सागरोपम (ख)

(j) केवली समुद्घात से निवृत्त होते ही जीव प्रवृत्त होता है ?
(क) योगों में (ख) अयोगी अवस्था में
(ग) अनाहारक अवस्था में (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(k) अवधि दर्शन की उत्कृष्ट कायस्थिति होती है-
(क) 33 सागरोपम (ख) 33 सागरोपम झाझेरी
(ग) 132 सागरोपम झाझेरी (घ) 66 सागरोपम (ग)

(l) कितनी दिशा से आये पुद्गल भाषा रूप में ग्रहण किये जा सकते हैं-
(क) 4 दिशा (ख) 5 दिशा
(ग) 2 दिशा (घ) 6 दिशा (घ)

(m) ''धान सहित कंकर के लिए यह कहना कि कंकर ही कंकर है।'' यह भाषा है-
(क) अजीव मिश्रिता (ख) जीव मिश्रिता
(ग) विगत मिश्रिता (घ) उत्पन्न मिश्रिता (क)

(n) जीव कौनसे योग से भाषा के पुद्गल ग्रहण करता है-
(क) वचन योग (ख) काय योग
(ग) मन योग (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(o) तेउकाय की उत्कृष्ट भव स्थिति होती है-
(क) 49 अहोरात्रि (ख) छह माह
(ग) 3 अहोरात्रि (घ) 12 वर्ष (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) बुद्ध द्वार के अन्तर्गत स्वयंबुद्ध दो समय तक निरन्तर सिद्ध हो सकते हैं। (हाँ)
(b) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय से निकले हुए मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। (हाँ)
(c) कोई जीव प्रतिपाति हुए बिना भी सिद्ध हो सकते हैं। (हाँ)
(d) तीर्थंकर के शासन काल में अधिक सिद्ध होते हैं। (हाँ)
(e) सुख दुःख को भोगता है, इसलिए जीव कहलाता है। (नहीं)
(f) शीर्ष प्रहेलिका पुद्गल परावर्तन काल का अनन्तवाँ भाग होता है। (हाँ)
(g) भाव पुद्गल परावर्तन में अध्यवसाय की अपेक्षा कथन है। (हाँ)
(h) सदा अचरम रहने वाला जीव अभवी है। (हाँ)
(i) पहाड़ जलता है, घड़ा झरता है, यह व्यवहार भाषा है। (नहीं)
(j) भाषा की स्थिति उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त की होती है। (हाँ)
(k) श्वास लेने में संख्यात आवलिका काल लग जाता है। (हाँ)
(l) तैजस पुद्गल परावर्तन से औदारिक पुद्गल परावर्तन निष्पतिकाल अनन्त गुणा है। (हाँ)
(m) सम्बन्ध की अपेक्षा जो सत्य है, वह अयोग सत्य है। (नहीं)
(n) 1 समय में 2 सिद्ध होने की अपेक्षा 1 समय में 1 सिद्ध अधिक होते हैं। (हाँ)
(o) लोभ कषाय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की होती है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	शाश्वत योजन	(क) ऊर्ध्वस्थित	4000 कोस
(b)	अतीर्थंकर सिद्ध	(ख) 20 सिद्ध	4 समय
(c)	14 राजूप्रमाण क्षेत्र	(ग) 6 आवलिका	संसार
(d)	पुढवी काल	(घ) थोड़े प्रदेश वाले	सूक्ष्म जीवों की उत्कृष्ट कायस्थिति
(e)	अढाई पुद्गल परावर्तन काल	(च) 4000 कोस	समुच्चय निगोद की उत्कृष्ट कायस्थिति
(f)	4 ज्ञान के धारक	(छ) आंतरा रहित	108 सिद्ध
(g)	योग	(ज) सत्त्व	सम्बन्ध
(h)	खड़े-खड़े	(झ) 10 सिद्ध	ऊर्ध्वस्थित
(i)	खण्ड भेद	(य)सूक्ष्म जीवों की उत्कृष्ट कायस्थिति	सोना
(j)	शुभाशुभ कर्मों से संयुक्त जीव	(र) समुच्चय निगोद की उत्कृष्ट कायस्थिति	सत्त्व
(k)	अव्यवहित	(ल) सोना	आंतरा रहित
(l)	अकर्मभूमि क्षेत्र से	(व) संसार	10 सिद्ध
(m)	सास्वादन समकित की उत्कृष्ट कायस्थिति	(क्ष) 4 समय	6 आवलिका
(n)	अनंतरावगाढ़ अणु	(त्र) 108 सिद्ध	थोड़े प्रदेश वाले
(o)	वप्रा विजय के ग्रामादि से	(ज्ञ) सम्बन्ध	20 सिद्ध

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a) सिद्धों के थोकड़े के आधार पर मेरा उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल होता है। स्त्री तीर्थंकर
(b) मेरी अवगाहना से सबसे कम सिद्ध होते हैं। 2 हाथ
(c) मेरा वर्णन भगवती सूत्र के दूसरे शतक के पहले उद्देशक में चलता है। मड़ाई निग्रन्थ

(d)	मैं चौथी बार प्राप्त हो जाऊं तो वह जीव उसी भव में मोक्ष जाता है।	आहारक शरीर
(e)	क्रोड पूर्व से अधिक होते ही मेरी स्थिति युगलिक की हो जाती है।	मनुष्य-तिर्यंच
(f)	मेरी राशि के सभी भवी जीव मोक्ष जायेंगे।	व्यवहार
(g)	मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति लब्धि पर्याप्त की अपेक्षा कही गई है।	पर्याप्त
(h)	मेरा संस्थान वज्र के आकार का है।	भाषा
(i)	मैं प्रकट स्पष्ट अर्थ वाली भाषा हूँ।	व्याकृता
(j)	मेरी जघन्य कायस्थिति 2 समय कम क्षुल्लक भव है।	छद्मस्थ आहारक
(k)	मैं ऐसा योग हूँ, जिससे भाषा के पुद्गल निकलते हैं।	वचन योग
(l)	मेरा वर्णन पन्नवणा सूत्र के 11वें पद में आया है।	भाषा का थोकड़ा
(m)	मेरा दूसरा नाम सूक्ष्म काल है।	पुढ़वी काल/पृथ्वीकाल
(n)	मैं आयुष्य कर्म का अनुभव करने के कारण कहलाता हूँ।	जीव
(o)	मेरे सम्बन्ध में पाँच उपमाएँ दी जाती हैं।	कुँए को भरना/पल्योपम

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) ''न्युब्जासन'' किसे कहते हैं ?
बैठे-बैठे अधोमुख रहते हुए।

(b) प्राण किसे कहते हैं?
बाह्य और आभ्यन्तर श्वासोच्छ्वास को प्राण कहते हैं।

(c) करण अपर्याप्त किसे कहते हैं ?
जिन्होंने स्वयोग्य पर्याप्तियाँ अभी तक पूर्ण नहीं की, परन्तु वे करेंगे।

(d) पुद्गल परावर्तन के थोकड़े का आधार लिखिए।
श्री भगवती सूत्र के बारहवें शतक के चौथे उद्देशक में

(e) कोड़ाकोडी किसे कहते हैं ?
करोड़ को करोड़ से गुणा करने पर जो संख्या आती है, उसे कोड़ाकोडी कहते हैं।

(f) बादर पृथ्वीकाय का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखिए।
जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट अनन्त काल अर्थात् वनस्पतिकाल।

(g) असत् को असत् की उपमा का उदाहरण दीजिए।
जैसे घोड़े के सींग गधे के सींग सरीखा है और गधे का सींग घोड़े के सींग जैसा है।

(h) संसार किसे कहते हैं ? परिभाषित कीजिए।
कर्मवशात् जीव जिसके अन्दर परिभ्रमण करें, भटके, उस चौदह राजूप्रमाण क्षेत्र को संसार कहते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) सिद्धों की उत्कृष्ट अवगाहना तथा सिद्ध क्षेत्र की लम्बाई-चौड़ाई लिखिए।
1 कोस में 2000 धनुष होते हैं। 2000 धनुष का छठा भाग अर्थात् 333 धनुष और 32 अंगुल की ऊँचाई में सिद्ध भगवान विराजमान रहते हैं।
सिद्ध क्षेत्र की लम्बाई-चौड़ाई 45 लाख योजन (शाश्वत योजन अर्थात् 4000 कोस का एक योजन) की होती है।

(b) गृहस्थ लिंग सिद्ध आदि तीनों लिंग की अल्पबहुत्व लिखिए।
1. गृहलिंग सिद्ध, सबसे थोड़े।
2. अन्यलिंग से सिद्ध हुए, उन से असंख्यात गुणा।
3. स्वलिंग से सिद्ध हुए, उनसे असंख्यात गुणा।

(c) औदारिक पुद्गल परावर्तन काल किसे कहते हैं ?
सर्व लोक के पुद्गल औदारिक शरीरपने ग्रहण करके छोड़ने में जितना काल लगे, उसे औदारिक

पुद्गल परावर्तन कहते हैं।

(d) समुच्चय सूक्ष्म, समुच्चय निगोद तथा समुच्चय वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट कायस्थिति लिखए।
समुच्चय सूक्ष्म-उत्कृष्ट असंख्यात काल (पृथ्वीकाल)
समुच्चय निगोद- उत्कृष्ट-ढाई पुद्गल परावर्तन काल (अनन्त काल)
समुच्चय वनस्पति- उत्कृष्ट-अनन्तकाल (असंख्य पुद्गल परावर्तन काल) वनस्पति काल

(e) मड़ाई निर्ग्रन्थ के थोकड़े के आधार पर प्राण तथा भूत को परिभाषित कीजिए।
बाह्य और आभ्यन्तर श्वासोच्छवास लेता है इसलिए वह प्राण कहलाता है। वह भूतकाल में था, वर्तमान काल में हैं और भविष्य काल में रहेगा इसलिए 'भूत' कहलाता है।

(f) काय अपरित तथा संसार परीत को परिभाषित कीजिए।
एक औदारिक शरीर में अनन्त जीव होना काय अपरीत कहलाता है।
संसार परीत का अर्थ प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्ति होना है। अर्थात् अनादि मिथ्यादृष्टि जीव जब पहली बार सम्यक्त्व को प्राप्त करता है, तब से वह संसार परीत कहलाता है।

(g) प्रतीत्य सत्य का आशय लिखिए।
दूसरी वस्तु की अपेक्षा जो सत्य है, वह प्रतीत्य सत्य है। जैसे कनिष्ठा (चट्टी) अंगुली की अपेक्षा अनामिका अंगुली बड़ी है और बीच की अंगुली की अपेक्षा अनामिका अंगुली छोटी है। जैसे एक ही व्यक्ति अपने पिता की अपेक्षा पुत्र है और पुत्र की अपेक्षा पिता है।

(h) कितने आरों में एक समय में कितने मनुष्य मात्र साहरण की दृष्टि से ही सिद्ध हो सकते हैं ?
अवसर्पिणी काल के तीसरे और चौथे आरे को छोड़कर शेष सात आरों में से एक समय में दस-दस सिद्ध हो सकते हैं।

कक्षा : दसवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) कायस्थिति का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र के किस पद से लिया गया है-
(क) 16वाँ (ख) 17वाँ
(ग) 18वाँ (घ) 8वाँ (ग)

(b) कायस्थिति के थोकड़े में कहाँ तक की स्थिति को संख्यात काल माना है-
(क) क्रोड़ पूर्व (ख) शीर्षप्रहेलिका
(ग) पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग (घ) पल्योपम (क)

(c) कायस्थिति के थोकड़े में अन्तर कहाँ से लिया है-
(क) पन्नवणा (ख) जीवाजीवाभिगम
(ग) भगवती सूत्र (घ) समवायांग (ख)

(d) द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवों के उत्कृष्ट स्थिति के लगातार कितने भव हो सकते हैं-
(क) 5 (ख) 6
(ग) 7 (घ) 8 (घ)

(e) प्रत्येक वनस्पति के पर्याप्त की उत्कृष्ट कायस्थिति है-
(क) 80,000 वर्ष (ख) 70 कोडाकोड़ी सागर
(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) असंख्यात काल (क)

(f) स्त्री वेद की जघन्य काय स्थिति कितनी हैं -
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) एक समय
(ग) 8 वर्ष (घ) 12 मुहूर्त्त (ख)

(g) प्रत्येक बुद्ध निरन्तर कितने समय तक सिद्ध हो सकते हैं-
(क) 8 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 3 (ग)

(h) जघन्य अवगाहना वाले निरन्तर कितने समय तक सिद्ध हो सकते हैं-
(क) 5 (ख) 8
(ग) 3 (घ) 3 (बोनस अंक)

(i) पुरुष तीर्थंकर एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं-
(क) 4 (ख) 5
(ग) 8 (घ) 7 (क)

(j) सबसे थोड़े पुद्गल परावर्तन कौनसे हैं-
(क) औदारिक (ख) वैक्रिय
(ग) तैजस (घ) कार्मण (ख)

(k) लब्धि अपर्याप्त जीव कितनी गति में होते हैं -
(क) 4 (ख) 3
(ग) 2 (घ) 1 (ग)

(l) प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्ति होना क्या कहलाता है-
(क) संसार परीत्त (ख) काय परीत्त
(ग) भवी (घ) आराधक (क)

(m) चरम होते हैं-
(क) सिद्ध (ख) अभव्य
(ग) भव्य (घ) संसारी (ग)

(n) त्रीन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट भवस्थिति कितनी है-
(क) 6 माह (ख) 3 अहोरात्रि
(ग) 12 वर्ष (घ) 49 अहोरात्रि (घ)

(o) तेजो लेश्या की उत्कृष्ट कायस्थिति किसकी अपेक्षा से है-
(क) पाँचवें देवलोक (ख) दूसरे देवलोक
(ग) मनुष्य (घ) युगलिक मनुष्य (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) बादर जीवों की उत्कृष्ट काय स्थिति बादर काल है। (हाँ)
(b) शुक्लपक्षी की उत्कृष्ट कायस्थिति अढ़ाई पुद्गल परावर्तन है। (नहीं)
(c) मनोयोगी की उत्कृष्ट कायस्थिति अन्तर्मुहूर्त्त होती है। (हाँ)
(d) स्त्रीवेद के लगातार आठ भव ही हो सकते हैं। (नहीं)
(e) क्रोध, मान, माया इन तीन कषायों का जघन्य अन्तर एक समय का होता है। (हाँ)
(f) सिद्ध क्षेत्र की लम्बाई, चौड़ाई शाश्वत योजन से है। (हाँ)
(g) भाषा की उत्पत्ति पाँचों शरीरों से होती है। (नहीं)
(h) भाषा के पुद्गल लोकान्त तक जाते हैं। (हाँ)
(i) जीव अनन्त आकाश प्रदेशों में अवगाढ़ रहे पुद्गल स्कन्धों को ग्रहण करता है। (नहीं)
(j) एक स्पर्श वाले पुद्गल भाषा रूप में ग्रहण किये जाते हैं। (नहीं)
(k) स्त्री तीर्थंकरों का उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है। (हाँ)
(l) जीव वचनयोग से भाषा के पुद्गल ग्रहण करता है। (नहीं)
(m) स्थल से सिद्ध हुए सबसे थोड़े तथा जल से सिद्ध हुए संख्यात गुणा है। (नहीं)
(n) सिद्धों का जघन्य अन्तर एक समय व उत्कृष्ट 6 माह का है। (हाँ)
(o) गृहस्थलिंग में उत्कृष्ट निरन्तर 4 समय तक सिद्ध हो सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	असंख्यात समय	(क) एक योजन	एक आवलिका
(b)	सात प्राण	(ख) भाव पुद्गल परावर्तन	एक स्तोक
(c)	7 स्तोक	(ग) अधोलोक	एक लव
(d)	84 लाख वर्ष	(घ) 6 मास	एक पूर्वांग
(e)	अनन्त शीर्ष प्रहेलिका	(च) 20 सिद्ध	एक पुद्गल परावर्तन
(f)	8 शीतसेणिया	(छ) एक आवलिका	एक ऊर्ध्वरेणु
(g)	8 त्रसरेणु	(ज) एक स्तोक	एक रथ रेणु
(h)	8 लीख	(झ) एक लव	युका
(i)	दो हाथ	(य) एक पूर्वांग	एक कुक्षि
(j)	चार गाउ	(र) एक पुद्गल परावर्तन	एक योजन
(k)	अलावा	(ल) एक ऊर्ध्वरेणु	8064
(l)	अध्यवसाय	(व) एक रथ रेणु	भाव पुद्गल परावर्तन
(m)	सलिलावती	(क्ष) युका	अधोलोक
(n)	सिद्ध का विरह	(त्र) एक कुक्षि	6 मास
(o)	पाँचवाँ आरा	(ज्ञ) 8064	20 सिद्ध

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) मेरे पुद्गल परावर्तन नहीं होते हैं। आहारक वर्गणा
(b) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 6 आवलिका है। सास्वादन समकित
(c) मेरी जघन्य तथा उत्कृष्ट कायस्थिति एक समय की है। क्षायिक वेदक
(d) मैं संयम सापेक्ष हूँ। मनःपर्याय ज्ञान

(e)	चौथे समय में मेरा क्षेत्र सर्वलोकव्यापी होता है।	केवली
(f)	मुझसे निकले हुए एक समय में चार सिद्ध हो सकते हैं।	पंकप्रभा
(g)	मेरा निष्पति काल सबसे थोड़ा है।	कार्मण पुद्गल परावर्तन
(h)	'अमुक वस्तु दो' इस प्रकार की याचना करने वाली भाषा मैं कहलाती हूँ।	याचनी
(i)	मेरे अनेक अर्थ होने से श्रोता के मन में संशय उत्पन्न होता है।	संशयकरणी
(j)	मेरे उदय से लोग असत्य भाषा बोलते हैं।	मोहनीय कर्म
(k)	मुझे बोलने वाले सबसे अधिक हैं।	व्यवहार भाषा
(l)	सिद्धान्त में मुझे ही सर्वत्र उपयोगी बताया है।	सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन
(m)	भाव से मैं ही सिद्ध होता हूँ।	स्वलिंगी
(n)	मैं वह नरक हूँ, जहाँ से अनन्तरागत सिद्ध सबसे थोड़े हैं।	चौथी नरक
(o)	मेरी कायस्थिति 2000 सागरोपम झाझेरी है।	त्रसकाय

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) बादर तैजस काय के पर्याप्त की जघन्य-उत्कृष्ट काय स्थिति लिखिए।

उ. जघन्य-अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट-संख्यात अहोरात्रि।

(b) अचरम के दो प्रकार कौनसे हैं ?

उ. 1. अभव्य 2. सिद्ध

(c) करण अपर्याप्त किसे कहते हैं ?

उ. ऐसे लब्धि पर्याप्त जीव जिन्होंने स्वयोग्य पर्याप्तियों को अभी तक पूर्ण नहीं किया है, किन्तु अवश्य पूर्ण करेंगे वे 'करण अपर्याप्तक' कहलाते हैं

(d) संसार परीत की जघन्य, उत्कृष्ट काय स्थिति लिखिए।

उ. जघन्य- अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट- देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन।

(e) मड़ाई निर्ग्रन्थ के जीव को क्या कहना चाहिए ?

उ. उसको प्राण, भूत, सत्त्व, विज्ञ, वेद कहना चाहिए।

(f) सिद्धों का थोकड़ा कहाँ से लिया गया है ?

उ. अज्ञात पूर्वधर आचार्य द्वारा रचित सिद्ध प्राभृत ग्रन्थ के आधार से सिद्धों का थोकड़ा लिया गया है।

(g) पहले समय में कितने सिद्ध होने पर दूसरे समय में अवश्य अन्तर पड़ता है ?

उ. यदि पहले समय में ही एक सौ तीन से लेकर 108 सिद्ध हों, तो दूसरे समय में अन्तर अवश्य पड़ता है।

(h) बुद्ध द्वार का अल्प-बहुत्व लिखिए।

उ. स्वयं बुद्ध थोड़े उससे प्रत्येक बुद्ध संख्यात गुणा, उनसे बुद्धबोधित संख्यात गुणा।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) सूक्ष्म वनस्पति व सूक्ष्म निगोद के दो बोल बताने का क्या कारण है ?

उ. सूक्ष्म वनस्पतिकाय के बोल में सूक्ष्म वनस्पतिकाय के जीवों की तथा सूक्ष्म निगोद के बोल में सूक्ष्म वनस्पति काय के जीवों की शरीर की प्रधानता से काय स्थिति बतलाई है। अर्थात् दोनों बोलों में जीव की ही काय स्थिति होने पर भी एक बोल में जीव की प्रधानता तथा दूसरे बोल में शरीर की प्रधानता ली गयी है।

(b) **अवधिदर्शन की उत्कृष्ट कायस्थिति 132 सागरोपम कैसे होती है ?**

उ. कोई विभंगज्ञानी मनुष्य 12वें देवलोक या पहले ग्रैवेयक में विभंगज्ञान लेकर आवे और वहाँ से अवधिज्ञान लेकर मनुष्य में जावे। फिर इसी तरह विभंगज्ञान लेकर आवे और अवधिज्ञान लेकर जावे। ऐसे तीन भव 12वें देवलोक के अथवा प्रथम ग्रैवेयक के करने से 66 सागरोपम की स्थिति होती है। बीच-बीच के मनुष्य के भवों की स्थिति मिलाने से साधिक (झाझेरी) हो जाती है। फिर विजयादि अनुत्तर विमानों में अवधिज्ञान सहित दो बार आने से छासठ सागरोपम तथा बीच के मनुष्य भव की स्थिति मिलाने से 'साधिक छासठ सागरोपम' हो जाती है। इस प्रकार कुल मिलाकर दस भवों में (मनुष्य + 12वाँ देवलोक, मनुष्य+12वाँ देवलोक, मनुष्य+12वाँ देवलोक, मनुष्य+अनुत्तर विमान, मनुष्य+अनुत्तर विमान) अवधि दर्शन की काय स्थिति साधिक 132 सागरोपम हो जाती है।

(c) **संसार विच्छेद करने वाले मड़ाई निर्ग्रन्थ के जीव को क्या कहना चाहिए ?**

उ. उसे 'सिद्ध' कहना, 'बुद्ध' कहना, 'मुक्त' कहना, 'पारगत' (पार पहुँचा हुआ) कहना, परम्परागत (अनुक्रम से एक पगतिये से दूसरे और दूसरे से तीसरे, इस तरह संसार के पार पहुँचा हुआ) कहना। इस प्रकार उसे सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिर्वृत (परिणिव्वुडे) अन्तकृत (अंतकडे) और सर्व दुःखों से रहित कहना चाहिए।

(d) **अवगाहना द्वार का अल्प-बहुत्व लिखिए।**

उ. दो हाथ प्रमाण अवगाहना से सिद्ध हुए सबसे थोड़े। पाँच सौ धनुष की अवगाहना से सिद्ध हुए उनसे असंख्यात गुणा। मध्यम अवगाहना से सिद्ध हुए उनसे असंख्यात गुणा।

(e) **भाषा पद के ग्रहण-निस्सरण द्वार को समझाइए।**

उ. पहले समय में ग्रहण करता है। दूसरे और आगे के समयों में ग्रहण भी करता है, निकालता भी है और अन्त समय में सिर्फ निकालता ही है। इस प्रकार जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय प्रमाण अन्तर्मुहूर्त्त तक ग्रहण निस्सरण करता है।

(f) **सत्यभाषा के 10 भेदों का नामोल्लेख कीजिए।**

उ. 1.जनपद सत्य, 2. सम्मत सत्य, 3. स्थापना सत्य 4. नाम सत्य, 5. रूप सत्य, 6. प्रतीत्य सत्य, 7. व्यवहार सत्य, 8. भाव सत्य, 9. योग सत्य, 10. उपमा सत्य।

(g) **कौनसे आठ द्वारों से सिद्धों का थोकड़ा बतलाया गया है ?**

उ. 1. आस्तिक द्वार, 2. द्रव्य द्वार, 3. क्षेत्र द्वार, 4. स्पर्श द्वार, 5. काल द्वार, 6. अन्तर द्वार, 7. भाव द्वार, 8.अल्पबहुत्व द्वार।

(h) **मन पुद्गल परावर्तन से वचन पुद्गल परावर्तन का निष्पत्तिकाल अनन्त गुणा क्यों बतलाया है?**

उ. मन की अपेक्षा वचन शीघ्र प्राप्त होता है तथा द्वीन्द्रियादि अवस्था में भी वचन होता है, तथापि मन द्रव्यों की अपेक्षा भाषा द्रव्य अति स्थूल है। इसलिये एक समय में उनका अल्प परिमाण में ही ग्रहण होता है, अतः मन पुद्गल परावर्तन निष्पत्तिकाल से वचन पुद्गल परावर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुणा है।

कक्षा : दसवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे में एक समय में उत्कृष्ट सिद्ध होते हैं-

(क) 4 (ख) 20

(ग) 10 (घ) 108 (घ)

(b) एक समय में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध होते हैं-

(क) 20 (ख) 10

(ग) 108 (घ) 40 (ख)

(c) सिद्ध होने का उत्कृष्ट विरह है-

(क) 1 समय (ख) अन्तर्मुहूर्त्त

(ग) 6 मास (घ) पल्योपम के असंख्यात भाग (ग)

(d) अधोलोक में विजय है-

(क) सलिलावती (ख) वप्रा

(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं (ग)

(e) वर्षधर पर्वत में से उत्कृष्ट सिद्ध होते हैं-

(क) 1 (ख) 2

(ग) 4 (घ) 10 (घ)

(f) भाषा की उत्पत्ति नहीं होती है-

(क) कार्मण शरीर से (ख) औदारिक शरीर से

(ग) वैक्रिय शरीर से (घ) आहारक शरीर से (क)

(g) जो भाषा गंभीर शब्द अर्थ वाली होने से स्पष्ट न हो-

(क) संशयकरणी (ख) अभिगृहीता

(ग) प्रज्ञापनी (घ) अव्याकृता (घ)

(h) एक बेंत में अंगुल होते हैं-

(क) 6 अंगुल (ख) 12 अंगुल

(ग) 24 अंगुल (घ) 96 अंगुल (ख)

(i) क्षुल्लक भव होता है-

(क) 256 आवलिका (ख) एक मुहूर्त्त

(ग) 6 आवलिका (घ) 4 मिनट (क)

(j) सित्तर लाख छप्पन हजार करोड़ वर्षों का होता है-

(क) एक अवसर्पिणी काल (ख) एक पूर्व

(ग) एक पल्योपम (घ) 33 सागरोपम (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) भाव से स्वलिंगी, अन्यलिंगी और गृहस्थलिंगी सिद्ध होते हैं। (नहीं)

(b) ऊर्ध्वलोक में निरन्तर चार समय तक सिद्ध हो सकते हैं। (हाँ)

(c) भाषा का संस्थान वज्र के आकार का है। (हाँ)

(d) सम्बन्ध की अपेक्षा से जो सत्य है, वह भाव सत्य है। (नहीं)

(e) कोंकण देश में पानी को 'पिच्च' कहते हैं। (हाँ)

(f) कार्मण पुद्गल परावर्तन से तैजस पुद्गल परावर्तन का निष्पत्ति काल अनन्त गुण है। (हाँ)

(g) सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन पंच संग्रह भाग-2 के आधार से बताया है। (हाँ)

(h) पूर्व पश्चिम महाविदेह क्षेत्र के मनुष्यों के आठ बालाग्र एक लीख के बराबर होते हैं। (हाँ)

(i) काय स्थिति के थोकड़े का वर्णन अव्यवहार राशि के जीवों की अपेक्षा से समझना चाहिए। (नहीं)

(j) चतुरिन्द्रिय जीवों की भव स्थिति उत्कृष्ट 12 वर्ष की होती है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	संख्यात आवलिका	(क) एक मुहूर्त्त	एक श्वांस
(b)	पाँच संवत्सर	(ख) एक मास	एक युग
(c)	दो पक्ष	(ग) एक शीत सेणिया	एक मास
(d)	84 लाख वर्ष	(घ) एक युका	एक पूर्वांग
(e)	77 लव	(च) एक श्वांस	एक मुहूर्त्त
(f)	आठ उष्ण सेणिया	(छ) एक बादर परमाणु	एक शीत सेणिया
(g)	आठ लीख	(ज) एक पूर्वांग	एक युका
(h)	दो हजार धनुष	(झ) 96 अंगुल	एक कोस
(i)	अनन्ता सूक्ष्म परमाणु	(य) एक युग	एक बादर परमाणु
(j)	चार कुक्षि	(र) एक कोस	96 अंगुल

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं प्रासुक भोजन करने वाला निर्ग्रन्थ हूँ।	मड़ाई
(b)	मैं भूतकाल में था, वर्तमान काल में हूँ और भविष्य काल में रहूँगा।	भूत
(c)	मैं प्रकट स्पष्ट अर्थ वाली भाषा हूँ।	व्याकृता
(d)	मेरी उत्कृष्ट काय स्थिति दो समय की है।	छद्मस्थ अनाहारक
(e)	मैं नियमा अपर्याप्त अवस्था में काल करता हूँ।	लब्धि अपर्याप्तक
(f)	मैं भाषा योग्य पुद्गलों को ग्रहण करके छोड़ता हूँ।	वचन योगी
(g)	मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति अढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल है।	समुच्चय निगोद
(h)	मेरी जघन्य काय स्थिति 2 समय कम 256 आवलिका है।	छद्मस्थ आहारक
(i)	मुझमें रहे सभी भव्य जीव मोक्ष में जाते हैं।	व्यवहार राशि
(j)	मेरा अर्थ प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्ति होना है।	संसार परीत

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2=(24)**

(a) जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट अवगाहना वाले निरन्तर कितने समय तक सिद्ध हो सकते हैं ?

उ. जघन्य अवगाहना वाले दो समय, मध्यम अवगाहना वाले निरन्तर आठ समय तक, उत्कृष्ट अवगाहना वाले दो समय तक निरन्तर सिद्ध हो सकते हैं।

(b) स्वलिंगी, अन्यलिंगी और गृहीलिंगी के सिद्ध होने का उत्कृष्ट अन्तर लिखिए।

उ. स्वलिंगी के सिद्ध होने का अन्तर उत्कृष्ट 1 वर्ष से कुछ अधिक, अन्य लिंगी और गृहलिंगी सिद्ध के सिद्ध होने का अन्तर उत्कृष्ट संख्याता हजार वर्ष।

(c) चार तरह की उपमा लिखिए।

उ. 1. सत् को सत् की उपमा। 2. सत् को असत् की उपमा।
3. असत् को सत् की उपमा। 4. असत् को असत् की उपमा।

(d) आख्यायिका निःसृत असत्य किसे कहते हैं ?

उ. कथाओं में असम्भव बातों का वर्णन आख्यिायिका निःसृत असत्य है।

(e) चारों भाषाओं की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. 1. सबसे थोड़े सत्य भाषा बोलने वाले। 2. मिश्र भाषा बोलने वाले असंख्यात गुणा।
3. असत्य भाषा बोलने वाले असंख्यात गुणा। 4. व्यवहार भाषा बोलने वाले असंख्यात गुणा।

(f) उत्करिका भेद को समझाइए।

उ. मसूर, मूँग, उड़द, तिल की फली और एरण्ड के बीज- ये सूखने पर फट कर इनमें से दाने उछल कर बाहर निकलते हैं, यह 'उत्करिका भेद' है।

(g) औदारिक पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं ?

उ. सर्व लोक के पुद्गल औदारिक शरीरपने ग्रहण करके छोड़ने में जितना काल लगे, उसे औदारिक पुद्गल परावर्तन कहते हैं।

(h) सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं ?

उ. औदारिक आदि शरीर में से किसी एक शरीर में रहते हुए संसार में परिभ्रमण करने वाला जीव जितने काल में जगद्वर्ती समस्त परमाणुओं को उसी शरीर रूप से स्पर्श (ग्रहण) करके छोड़ दे, उतने काल विशेष को सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन कहते हैं।

(i) पुरुषवेद की कायस्थिति और अन्तर लिखिए।

उ. पुरुषवेद की कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ सागरोपम से कुछ अधिक।
पुरुषवेद अन्तर- जघन्य एक समय का, उत्कृष्ट अनंतकाल (वनस्पतिकाल) का।

(j) बादर तैजस्काय की काय स्थिति और अन्तर लिखिए।

उ. बादर तैजस्काय की काय स्थिति- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट संख्यात अहोरात्रि की।
बादर तैजस्काय का अन्तर- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का, उत्कृष्ट अनन्त काल (वनस्पतिकाल) का।

(k) छद्मस्थ और केवली के उपयोग में क्या अन्तर है ?

उ. छद्मस्थों का उपयोग क्षायोपशमिक भाव युक्त होने के कारण एवं उपयोग की अनेकविधता होने से इनकी जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की होती है।

केवलियों का उपयोग एक समयवर्ती होता है, क्योंकि इन जीवों का उपयोग स्वभावतः एक समय के बाद बदल जाता है।

(l) काय परीत व काय अपरीत का अन्तर लिखिए।

उ. काय परीत का अन्तर- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का, उत्कृष्ट अनन्तकाल (अढ़ाई पुद्गल परावर्तन) का।

काय अपरीत का अन्तर- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का, उत्कृष्ट असंख्यात काल (पृथ्वीकाल) का।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्ति में लिखिए (कोई बारह): - 12x3=(36)

(a) मड़ाई अणगार को विज्ञ और वेद क्यों कहा गया है ?

उ. मड़ाई अणगार तीखे, कड़वे, कषैले, खट्टे और मीठे रसों का जानता है, इसलिए 'विज्ञ' कहलाता है।

मड़ाई अणगार सुख-दुःख को भोगता है, इसलिए 'वेद' कहलाता है।

(b) गति के आधार पर सिद्धों की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. 1. मनुष्य-स्त्रियों से अनन्तरागत सिद्ध, सबसे थोड़े।

2. शेष मनुष्यों से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

3. नैरयिकों से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

4. तिर्यंच स्त्रियों से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

5. शेष तिर्यंचों से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

6. देवियों से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

7. देवों से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

(c) भवनपति से वैमानिक तक के देवों से निकलकर किस-किस प्रमाण में सिद्ध हो सकते हैं ?

उ. भवनपति से दस, उनकी देवी से आये पाँच, वाणव्यन्तर से दस, उनकी देवी से पाँच, ज्योतिषी देवों से दस, उनकी देवियों से बीस और वैमानिक देवों से आये हुए एक समय में 108, उनकी देवियों से आए हुए एक समय में 20 सिद्ध हो सकते हैं।

(d) पूर्वभाव नय की अपेक्षा सिद्धों का क्षेत्र लिखिए।

उ. पूर्वभाव नय की अपेक्षा से केवली जब शरीरस्थ होते हैं, केवली समुद्घात में दण्ड व कपाट अवस्था में होते हैं अर्थात् पहले, दूसरे समय में होते हैं तब उनका क्षेत्र लोक का असंख्यातवाँ भाग अवगाढ़ होता है। केवली जब केवली समुद्घात में मंथान अवस्था में अर्थात् केवली समुद्घात के तीसरे समय में होते हैं, तब उनका क्षेत्र लोक के असंख्य बहुभाग में अवगाढ़ होता है। जब केवली, केवली समुद्घात के चौथे समय में स्थित होते हैं, तब उनका क्षेत्र सर्वलोकव्यापी अवगाढ़ होता है।

(e) भाषा का अवसान कहाँ तक होता है ?

उ. भाषा के पुद्गल लोकान्त तक जाते हैं। आगे गति का आधारभूत धर्मास्तिकाय नहीं है अतः भाषा के पुद्गलों का आगे जाना संभव नहीं है। विशिष्ट शक्ति सम्पन्न पुरुष द्वारा बोले हुए भाषा के पुद्गल लोकान्त पर्यन्त तक जाते हैं, नहीं तो संख्यात असंख्यात योजन तक जाकर नष्ट हो जाते हैं।

(f) स्थापना सत्य को परिभाषित कीजिए।

उ. सदृश अथवा विसदृश आकार वाली वस्तु में वस्तु विशेष की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना 'स्थापना सत्य' है। विशेष प्रकार के अंक लिखकर उनमें संख्या विशेष का आरोप करना भी 'स्थापना सत्य' है।

(g) सम्मत सत्य को समझाइए।

उ. सभी लोगों को सम्मत होने से जो सत्य रूप प्रसिद्ध है, वह सम्मत सत्य है- जैसे पंकज शब्द का अर्थ कीचड़ से उत्पन्न होने वाला होता है। कीचड़ से कमल, कुमुद, शेवाल, मेंढक आदि उत्पन्न होते हैं। किन्तु कमल को ही पंकज कहते हैं , अन्य को नहीं।

(h) पल्योपम को समझाने (ठसाठस भरने) की पाँच उपमाएँ लिखिए।

उ. 1. चक्रवती की सेना उस भरे हुए कुए के ऊपर से होकर निकल जाय तो जरा सा भी दबे नहीं (एक खण्ड भी मुड़े नहीं)।

2. संवर्त्तक नाम का वायु चले तो एक खण्ड (टुकड़ा) भी उड़े नहीं।

3. पुष्करावर्त मेघ बरसे तो एक खंड भी भींजे नहीं।

4. गंगा सिन्धु नदी का पूर आवे तो एक खण्ड भी बहे नहीं।

5. महा दावानल (वनाग्नि) लगे तो एक खंड भी जले नहीं।

(i) सूक्ष्म काल को समझाइए।

उ. असंख्यात लोकों में जितने भी आकाश प्रदेश हैं, उन्हें कोई प्रति समय निकाले, उसमें जितना काल लगे, उसे पुढ़वीकाल कहते हैं। बादर काल से पुढ़वीकाल असंख्यात गुणा अधिक होता है। सूक्ष्म जीवों की उत्कृष्ट काय स्थिति पुढ़वी काल की होती है, अतः इसे सूक्ष्म काल भी कहते हैं।

(j) सूक्ष्म और साधारण वनस्पति के चार भेदों की अलग-अलग तथा सम्मिलित काय स्थिति लिखिए।

उ.	जघन्य	उत्कृष्ट
1. सूक्ष्म वनस्पति (सूक्ष्म साधारण) के अपर्याप्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त
2. सूक्ष्म वनस्पति के पर्याप्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त
3. सूक्ष्म वनस्पति के पर्याप्त-अपर्याप्त दोनों की मिलाकर	अन्तर्मुहूर्त्त	असंख्यातकाल (पुढ़वी काल)
4. साधारण वनस्पति (बादर साधारण)	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त
5. साधारण वनस्पति के पर्याप्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त
6.साधारण वनस्पति के पर्याप्त-अपर्याप्त	अन्तर्मुहूर्त्त	70 कोड़ाकोड़ी सागरोपम
7. सूक्ष्म व साधारण वनस्पति के पर्याप्त-अपर्याप्त इन चारों भेदों की मिलाकर	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्त काल (अढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल)

(k) प्रथम तीन लेश्याओं की काय स्थिति लिखिए।

उ. कृष्णा लेश्या वाले कापात लेश्या की काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट तीन सागरोपम तथा पल्योपम के असंख्यातवें भाग की काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट तैतीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त अधिक। नील लेश्या वाले की काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट दस सागरोपम पल्योपम के असंख्यातवें भाग अधिक।

(l) दर्शन के चार भेदों की कायस्थिति व अन्तर लिखिए।

उ. कायस्थिति - चक्षुदर्शन की कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट एक हजार सागरोपम से कुछ अधिक। अचक्षुदर्शन के दो भंग- अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित। अवधिदर्शन की काय स्थिति जघन्य एक समय की, उत्कृष्ट 132 सागरोपम से कुछ अधिक, केवलदर्शन में एक-सादि अपर्यवसित भंग पाता है।

अन्तर- चक्षुदर्शन और अवधिदर्शन का अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का, उत्कृष्ट अनन्तकाल यानी वनस्पतिकाल का, अचक्षुदर्शन और केवलदर्शन का अन्तर नहीं होता है।

(m) कायस्थिति का भाषक पद लिखिए।

भाषक की कायस्थिति जघन्य एक समय की, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त की। अभाषक के दो भेद- सिद्ध अभाषक और संसारी अभाषक। सिद्ध अभाषक सादि अपर्यवसित हैं संसारी अभाषक की काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट अनन्त काल (वनस्पतिकाल) की।